विशेष

12

'वीणा' (कक्षा 5) हिंदी की पाठ्यपुस्तक के विषय में

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह हर्ष का विषय है कि कक्षा 5 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक वीणा आपके हाथ में है। इसका निर्माण करते हुए मुख्य रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशानिर्देशों को ध्यान में रखा गया है। भाषा सीखना विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का महत्वपूर्ण पहलू है। भाषा के सहारे बच्चे अपने परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ते हैं। बच्चों में बुनियादी एवं संवैधानिक मूल्यों की स्थापना, स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति सतर्कता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम आदि को प्राप्त करने का माध्यम भाषा ही है। अतः यहाँ भाषा सीखने का तात्पर्य केवल पढ़ना और लिखना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों की जीवन-शैली में परिवर्तन होने के साथ-साथ उनमें अपेक्षित व्यवहारगत बदलाव होना भी शामिल है।

भाषा हमारी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी समाज और व्यक्ति के आचार-व्यवहार, खान-पान, सोच-समझ, लोक-संस्कृति आदि को जानना और समझना हो तो भाषा ही सहायक सिद्ध होती है। हमारी परंपरा और संस्कृति भी प्रधानतः भाषा के माध्यम से ही संरक्षित होती आ रही है। भाषा की इस प्रकृति एवं प्रकार्यों का सापेक्ष संबंध विद्यालयी शिक्षा से जुड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थियों को अन्वेषण, सर्जनात्मक चिंतन और तार्किक चेतना के माध्यम से स्वयं ज्ञान सृजन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। विद्यार्थी भाषा को केवल नियमबद्ध व्यवस्था के रूप में न देखें, अपितु इसके सौंदर्य-शास्त्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक पक्ष को भी समझें। इन बिंदुओं के आलोक में पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से निम्नलिखित विचारों को ध्यान में रखा गया है—

- पुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, पत्र, संवाद, नाटक, पहेली, चुटकुले व अन्य रचनाओं को रखा गया है, ताकि विद्यार्थी पिछली कक्षाओं में पढ़ी गई सामग्री की श्रृंखला में इसे देखें और इनसे अधिक गहराई से जुड़ें। पाठ्यपुस्तक में संयोजित सामग्री रुचिपूर्ण एवं पाठ्यचर्या के लक्ष्यों व सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखकर

चयनित की गई है तथा पाठाभ्यासों को कुछ इस प्रकार विकसित किया गया है जिससे विद्यार्थियों में भाषा-संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने संबंधी रुचि का विकास होगा।

- पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहे भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है।
- यह पुस्तक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश के इर्द-गिर्द अपना ताना-बाना रचती है। हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से विद्यार्थियों में समावेशी दृष्टिकोण लाने और भारतीय संस्कृति की विविधता के प्रति सकारात्मक बोध विकसित करने के उद्देश्य को पुस्तक द्वारा पाने का प्रयास किया गया है।
- पुस्तक में विभिन्न भाषायी कौशलों, जैसे— समझ के साथ बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों के जीवन और उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।

पाठ्यचर्या के लक्ष्य

प्रारंभिक स्तर (प्रिपरेटरी स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (विद्यालयी शिक्षा) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं—

पाठ्यचर्या लक्ष्य 1— विचारों को सुसंगतरूप से समझने और संप्रेषित करने के लिए जटिल वाक्य संरचनाओं का उपयोग करते हुए मौखिक भाषा कौशल विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 2— परिचित और अपरिचित पाठ्यवस्तु (जैसे— गद्य और पद्य) के विभिन्न रूपों की बुनियादी समझ विकसित करके अर्थ बोध सहित पढ़ने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 3— अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए सरल और यौगिक वाक्य संरचनाओं को लिखने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 4— विभिन्न स्रोतों के माध्यम से विभिन्न संदर्भों (घर और विद्यालय के अनुभव) में व्यापक शब्द भंडार विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 5— पढ़ने में रुचि और प्राथमिकताओं को विकसित करते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में इन लक्ष्यों की प्राप्ति भी एक प्रमुख उद्देश्य है। पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को ही ध्यान में रखते हुए दक्षताएँ निर्धारित की गई हैं और इन्हीं दक्षताओं की निरंतरता में सीखने के प्रतिफलतय किए गए हैं। यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित लक्ष्यों, दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफलों के समन्वितरूप को प्रतिबिंबित करती है।

पाठ्यपुस्तक में पाठ्यसामग्री का संयोजन

पुस्तक का आरंभ 'किरण' कविता से किया गया है। यह कविता सूर्य की किरणों के बारे में रोचक, सरल और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। 'सुंदरिया' (कहानी) में मानवीय भावनाओं को प्रस्तुत किया गया है। सुंदरिया, हीरा सिंह के परिवार के लिए केवल एक पशु नहीं है, बल्कि पारिवारिक सदस्य की तरह है। 'न्याय' (नाटक) में हंस को बचाने का करुणामय व्यवहार सिद्धार्थ द्वारा किया गया है।

ये दोनों रचनाएँ विद्यार्थियों को अपने परिवेश में अन्य प्राणियों को करुणा की दृष्टि से देखने और व्यवहार करने के लिए प्रेरित करेंगी। पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित 'न्याय की कुर्सी' तथा 'तीन मछलियाँ' कहानियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ व्यक्तित्व में विवेक, सत्यनिष्ठा और विनम्रता जैसे मानवीय गुणों की प्रेरणा देती है। हमारे देश में पंचतंत्र, जातक कथाएँ, हितोपदेश, सिंहासन बत्तीसी की कहानियाँ ज्ञानवर्धक, लोकप्रिय होने के साथ-साथ मूल्यों के संवर्धन के लिए उपयुक्त मानी जाती रही हैं।

भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधता तथा वैज्ञानिक प्रगति आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण पहचान है। अतः पुस्तक में इन विशेषताओं को उद्घाटित करने वाले विभिन्न साहित्यिक विधा वाले पाठ लिए गए हैं। 'साङकेन' (निबंध), 'हमारे ये कलामंदिर' (निबंध), 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा' (पत्र), 'गंगा की कहानी' (आत्मकथात्मक निबंध) और 'गगनयान' (विज्ञान कथा-संवाद) पाठ विद्यार्थियों में भारतीय भौगोलिक परिवेश और वैज्ञानिक तकनीकी प्रगति को जानने एवं भारतीयता को आत्मसात करने में सहायक होंगे।

बच्चे जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं। उनकी दिनचर्या में आनंद और हास्य सहजता से शामिल होते हैं। 'चाँद काकुरता' (कविता), 'चतुर चित्रकार' (कविता), 'पेड़ का जादू' (लघुकथा), 'दो मेंढकों की यात्रा' (जापानी लोककथा) तथा 'मेरा बचपन' (संस्मरण) रचनाएँ विद्यार्थियों को हँसाने-गुदगुदाने का माध्यम बनेंगी और उन्हें खेल-भावना के लिए भी उत्प्रेरित करेंगी।

सारांशतः कहा जा सकता है कि प्रस्तुत पुस्तक, विद्यार्थियों में शब्द पहचान से लेकर पढ़ने, समझने, लिखने, वैज्ञानिक एवं तार्किक चिंतन विकसित करने, रचनात्मकता एवं कल्पनाशीलता को पोषित करने जैसी प्रवृत्तियों को पुष्पित-पल्लवित करने का अवसर प्रदान करेगी। समग्र रूप से इस पाठ्यपुस्तक में हमारी परंपरा और संस्कृति से 'गगनयान' तक की यात्रा को भाषा और साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

मौखिक भाषा का विकास और लिखना

पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने की दृष्टि से अभ्यास निर्मित किए गए हैं। हर पाठ की समाप्ति के बाद 'बातचीत के लिए' शीर्षक से कुछ प्रश्न दिए गए हैं जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी भाग ले सकता है और अपना अनुभव साझा कर सकता है। उदाहरण के लिए 'किरन' कविता में बातचीत के लिए दिए गए प्रश्नों में एक प्रश्न है— 'आपको कैसे पता चलता है कि सुबह हो गई है?' एक अन्य उदाहरण 'चाँद का कुर्ता' कविता से है— 'जब आप अपने अभिभावक के साथ कपड़े खरीदने जाते हैं, तब किन बातों का ध्यान रखते हैं?' इस प्रकार के प्रश्न प्रत्येक विद्यार्थी के लिए हैं। ऐसे प्रश्न सभी विद्यार्थियों को अपने-अपने अनुभवों के आधार पर अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करते हैं।

बहुभाषिकता की भावना को पोषित करने की दृष्टि से भी ये प्रश्न उपयुक्त हैं। मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम, विद्यार्थियों को बिना किसी अवरोध के बोलने के अवसर प्रदान करना है।

पाठों के अभ्यास में विद्यार्थियों के लिए छोटे-छोटे वाक्य-निर्माण की गतिविधियाँ भी दी गई हैं। शब्द से वाक्य की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये कठिन न हों। विद्यार्थी सरलता और आनंद के साथ इन अभ्यासों को करें। उदाहरण के लिए, 'हमारे ये कला मंदिर' पाठ में विद्यार्थियों को धन्यवाद कार्ड लिखने की तथा 'न्याय' नाटक में सपने में सिद्धार्थ और हंस की बातचीत की रुचिकर गतिविधियाँ दी गई हैं। अतः पाठ्यपुस्तक में, बोलने से लिखित भाषा की ओर विद्यार्थियों की भाषा-यात्रा सुगम और सरल हो, इसका ध्यान रखा गया है।

कल्पना, जिज्ञासा और रचनात्मकता

पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में कल्पना विशेष स्थान रखती है। विद्यार्थी इस उम्र में कल्पना करने में पर्याप्त सक्रिय होते हैं। वे अपनी दिनचर्या में ढेरों कल्पनाएँ करते हैं या फिर कुछ न कुछ सोचने और करने के प्रयोग करते रहते हैं। कुछ पाठों के अभ्यास में ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिससे विद्यार्थियों की कल्पना की दुनिया में विस्तार हो। ऐसे प्रश्न विद्यार्थियों पर सही अथवा गलत उत्तर का दबाव नहीं डालते। उदाहरण के लिए, 'न्याय की कुर्सी' पाठ के अभ्यास में एक प्रश्न है— 'आप में कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए जिससे आप कहानी के सिंहासन पर बैठ सकें?' इसी प्रकार 'चतुर चित्रकार' कविता में प्रश्न दिया गया है— 'कल्पना कीजिए कि चित्रकार ने जंगल में एक चित्र कला विद्यालय खोला है। आप इस विद्यालय का कोई नाम सुझाइए और इसके बारे में कुछ वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।'

जिज्ञासा और खोजबीन करना बच्चों की मूल प्रवृत्तियों में से एक है। इसे ध्यान में रखते हुए संबंधित गतिविधियों को पाठों में शामिल किया गया है। उदाहरण के लिए, 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा' पत्र के अभ्यास के एक प्रश्न में विद्यार्थियों को पक्षी अभ्यारण्य, उसकी स्थापना की आवश्यकता के कारण तथा भारत के प्रसिद्ध पक्षी अभ्यारण्यों के बारे में खोजबीन करने और पुस्तकालय की सहायता लेने वाली गतिविधियाँ रखी गई हैं। इसी पाठ के एक अन्य अभ्यास में भारत के मानचित्र में विभिन्न राष्ट्रीय उद्यानों को दर्शाकर प्रश्न पूछे गए हैं। विद्यार्थी इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए इन स्थानों के बारे में पढ़ेंगे और जानेंगे। इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों में खोजबीन करने की प्रवृत्ति को बढ़ाएँगे।

रचनात्मकता, मन की बात करने तथा रचने और लिखने का अवसर प्रदान करती है। पुस्तक में सृजनात्मकता और विद्यार्थी के बीच के संबंध को जोड़ने और प्रक्रिया को बनाए रखने हेतु ऐसी बहुत-सी गतिविधियाँ दी गई हैं जो रोचक हैं। उदाहरण के लिए, 'न्याय' नाटक के अभ्यास में कागज का पक्षी बनाने की गतिविधि दी गई है। 'साङकेन' पाठ में पत्तियों द्वारा अपने मनपसंद प्राणी की आकृति तथा 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा' पाठ के अभ्यास में बादलों में पशुओं की आकृतियाँ बनाने की गतिविधियाँ दी गई हैं। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों की रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता को उभारने का कार्य करेंगी। विद्यार्थियों का पुस्तक से जुड़ा व स्थापित करने में ये रचनात्मक गतिविधियाँ सहायक सिद्ध होंगी। इस पुस्तक में रचनात्मक अभिव्यक्ति के

लिए भी स्थान रखा गया है। 'खट्टे हैं अंगूर' शीर्षक के माध्यम से चित्र आधारित अभिव्यक्ति रखी गई है। पुस्तक का समापन भी चित्र आधारित अभिव्यक्ति के माध्यम द्वारा किया गया है।

परिवेश, संवेदनशीलता एवं समेकन

पाठ्यसामग्री का संयोजन करते हुए ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी इन सामग्रियों से जुड़कर अपने परिवेश के प्रति और भी संवेदनशील बनें। पाठों व अभ्यासों में पर्यावरण और विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने वाली विभिन्न गतिविधियाँ दी गई हैं। उदाहरण के लिए, 'चाँद का कुर्ता' कविता में 'सोचिए, समझिए और बताइए' शीर्षक में दिया गया प्रश्न है— 'मान लीजिए चाँद का एक मित्र है जो देख नहीं सकता। चाँद उसे अपने बदलते हुए आकार के बारे में कैसे समझाएगा?' इसी प्रकार के अन्य संवेदनशील प्रश्न भी पाठों में हैं। महिलाओं और पुरुषों की सार्थक और संतुलित भागीदारी से समाज और राष्ट्र निर्मित होता है। अतः पाठ्यपुस्तक में जेंडर संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए पाठों और चित्रों में संतुलित दृष्टि अपनाई गई है। इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तक में भारतीय परंपरा एवं संस्कृति, विभिन्न अनुशासनों तथा कलाओं का पाठ्यसामग्री के साथ-साथ उपयुक्त शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि से समेकन भी किया गया है।

बहुभाषिकताऔर कक्षा-शिक्षण

बहुभाषिकता भारत की सामासिक संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। शिक्षण-अधिगम के क्षेत्र में बहुभाषिकता का उपयोग अलग-अलग तरीके से किया जाता है। दैनिक जीवन में मौजूद बहुभाषिकता के साथ-साथ पाठ्यसामग्री का भी बहुभाषिक होना आवश्यक होता है। विशेष रूप से छोटे विद्यार्थियों के लिए जब वे अपनी मातृभाषा से होते हुए हिंदी की समझ विकसित करने की कोशिश कर रहे होते हैं। इस पाठ्यपुस्तक में ऐसी गतिविधियाँ भी दी गई हैं जिसमें विद्यार्थी हिंदी के शब्दों के लिए अपनी-अपनी मातृभाषा में शब्द ढूँढ़ेंगे। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है— कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा बहुभाषिक शिक्षण पद्धति का उपयोग करना। अतः शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठों को पढ़ाते हुए विद्यार्थियों को अपनी भाषा, परिवेश और संस्कृति से जोड़ते हुए शिक्षण कार्य करें। सहायता के लिए स्थान-स्थान पर शिक्षण-संकेतों की भी व्यवस्था की गई है।

अंत में यह कि पाठ्यपुस्तक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का आधार है, एकमात्र साधन नहीं। एक रचनात्मक एवं प्रतिबद्ध शिक्षक को निरंतर नवीन पाठ्य सामग्रियों का सहारा लेना ही पड़ता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ शिक्षकों को अपने-अपने विद्यार्थियों का स्तर देखते हुए स्वयं ही तय करना पड़ता है कि उन्हें किस प्रकार की गतिविधियाँ और पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराई जाए। उद्देश्य तो अंततः अपेक्षित भाषायी कौशलों एवं दक्षताओं का विकास ही है। में पूर्ण विश्वास है कि हमारे शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक का निर्धारित उद्देश्यों और निर्देशों के अनुसार रचनात्मक उपयोग करेंगे जिससे शिक्षण-अधिगम प्रभावी होगा और विद्यार्थी आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।